DSSSB TGT & PGT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
कारक प्रकरण
Part -4
LIVE
13-05-2024 05:00 PM

15 May class off

सम्प्रदान कारक (चतुर्थी विभक्ति)

सूत्रः "कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् "

वृत्तिः दानस्य कर्मणा करणभूतेन कर्ता यमभिप्रैति तत् कारकं सम्प्रदानसंज्ञं भवति ।

सूत्रार्थः कर्ता दान कर्म करके जिसे अभिप्रेरित करता है, उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है।

सूत्रः " चतुर्थी सम्प्रदाने"

वृत्तिः सम्प्रदाने कारके चतुर्थी विभक्तिर्भवति ।

सूत्रार्थः अनुक्त सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे:

- राजा विप्राय गां ददाति । (राजा ब्राह्मण को गाय दान करता है)
- नृपः भिक्षुकाय धनं ददाति । (राजा भिक्षुक को धन दान करता है)
- भामाशाहः प्रतापाय धनं ददाति । (भामाशाह प्रताप को धन दान करता है ।)
- कर्णः इन्द्राय कवच-कुण्डलौ ददाति । (कर्ण इन्द्र को कवच और कुण्डल दान करता है ।)

सम्प्रदान कारक (चतुर्थी विभक्ति)

सम्प्रदान शब्द का अर्थ है उद्देश्य अर्थात् 'सम्यक् दीयते अस्मै इति सम्प्रदानम्' । जैसे - विप्राय गां ददाति' इस वाक्य में दा धातु का अर्थ है 'स्वस्वत्वनिवृत्तिपूर्वकपरस्वत्वोत्पत्ति' अर्थात् किसी वस्तु में अपने अधिकार की निवृत्तिऔर दूसरे के अधिकार की उत्पत्ति कराना । यहाँ पर कर्ता की इस इच्छा का उद्देश्य विप्र है और गो में स्वस्वत्पनिवृत्तिपूर्वकपरस्वत्वोत्पत्ति रूप फल ही व्यापार है । विप्र में चतुर्थीविभक्ति होकर विप्राय रूप बनता है । अतः इच्छा के उद्देश्य का नाम ही सम्प्रदान है ।

चतुर्थी विभक्ति के सूत्र, अर्थ एवं पद - विश्लेषण

वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी में कारक प्रकरण के अन्तर्गत चतुर्थीविभक्ति से सम्बन्धित सूत्र इस प्रकार हैं-

सूत्र - कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्

वृत्ति - दानस्य कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानसंज्ञः स्यात् ।

पदविश्लेषण - अस्मिन् सूत्रे कर्मणा तृतीयान्तम्, यं द्वितीयान्तम्, अभिप्रैति तिङन्तक्रियापदम्, सः प्रथमान्तम्, सम्प्रदानं प्रथमान्तपदमिति पंचपदानि वर्तन्ते । यह सम्प्रदानसंज्ञा करने वाला सूत्र है । कर्मणा शब्द करण-कारक में तृतीयाविभक्ति होकर निष्पन्न होता है। 'सम्यक् प्रदानं सम्प्रदानम्' अर्थात् 'सम्यक् - प्रकर्षेण दीयते अस्मै' इस व्युत्पत्ति के अनुसार जिसको वापस न लेने के लिए ही दिया जाता है वह सम्प्रदान कहलाता है । सम्प्रदान की दूसरी व्युत्पत्ति है :- सम्प्रदीयते यस्मै तत् सम्प्रदानमिति । दानशब्दस्य अर्थः "अपुनर्ग्रहणाय स्वस्वत्वनिवृत्तिपूर्वकं परस्वत्वोत्पादनम्" अर्थात् किसी वस्तु को अपने अधिकार से सदा के लिए हटाकर दूसरे के अधिकार में देना ।

सूत्रार्थ - कर्ता दान आदि क्रिया के शेषित्व - भोक्तृत्व के रूप में जिससे सम्बद्ध करना चाहता है, उसकी सम्प्रदानसंज्ञा होती है ।

सूत्र - चतुर्थी सम्प्रदाने

वृत्ति - विप्राय गां ददाति । अनभिहित इत्येव । दीयतेऽस्मै दानीयो विप्रः । "क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम्"। पत्ये शेते । "यजेः कर्मणः करणसंज्ञा सम्प्रदानस्य च कर्मसंज्ञा " । पशुना रुद्रं यजते । पशुं रुद्राय ददातीत्यर्थः ।

पदविश्लेषण - चतुर्थी प्रथमान्तं सम्प्रदाने सप्तम्यन्तं द्विपदमिदं सूत्रम् ।

सूत्रार्थ - अनुक्त सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है ।